E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 10-05-2023
Accepted: 21-06-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 864-868

नक्सलवाद अपने अवसान की ओरः एक विश्लेषण

डॉ. (श्रीमती) नीरज

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, कुरावली, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: डॉ. (श्रीमती) नीरज

सारांश

नक्सलवाद भारत की समस्या जो एक आतंकवाद के रूप में विस्तृत हो रही थी, भारत जैसे लोकतान्त्रिक देश के लिए एक विकट समस्या का रूप धारण कर चुकी थी। नक्सलवाद का भारत में प्रारम्भ वर्ष 1967 में हुए किसान विद्रोह से हुआ था। नक्सलवाद असमान आर्थिक विकास व वर्गीय विभेद के कारण उत्पन्न हुआ। नक्सलवाद माओवाद से प्रेरित विद्रोद था, जो धीरे–धीरे विद्रोह से आगे बढ़कर एक आन्दोलन के रूप में बढ़ने लगा। नक्सलवादी आन्दोलन में वे सभी समाज के लोग शामिल हो रहे थे जो छुआछूत, जातपात का शिकार बने थे। इस आन्दोलन में बुद्धिजीवी लोग भी इसका हिस्सा बन रहे थे। नक्सलवाद का प्रभाव बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, झारखण्ड, उत्तराखण्ड का सीमायी क्षेत्र, उत्तर प्रदेश का पूर्वी इलाका, महाराष्ट्र, कर्नाटक व केरल तक विस्तृत रूप से फैला हुआ है। सरकार द्वारा नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए बहुत प्रयास किये गये जैसे ''ऑपरेशन ग्रीन हंट'', ''ग्रे–हाउड्स'', ''सलवा जुडूम'', विशेष सी0आर0पी0एफ0 बटालियन की कोवरा के रूप में स्थापना। सरकार द्वारा नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए समस्त सरकारी सुविधायें नक्सलवाद से जुड़े लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया जिससे सभी नक्सली आन्दोलन से जुड़े लोग आम जनमानस की तरह जीवन यापन करने लगें और यह सरकार की योजना काम भी करने लगी। वर्तमान में नक्सलवाद अपने अवसान की ओर बढ़ रहा है और धीरे–धीरे समाप्ति की सीमा तक पहुँच जायेगा। जिससे भारत नक्सलवाद से मुक्ति पा लेगा।

मूलशब्दः नक्सबाड़ी, आर्थिक विषमताएँ, मार्क्सवादी विचारधारा, साम्राज्यवाद, शोषण, विद्रोह।

प्रस्तावना

विश्व पटल पर मार्क्सवाद का उदय वर्गीय विभेद एवं उससे उपजी आर्थिक विषमताओं की ओर ध्यान खींचता है। शोषण एवं उस शोषण से उपजी कुंठा विरोध के मार्ग पर चलती हुई विद्रोह में परिणीत हो जाती है। विश्व के अनेक देश असमान आर्थिक विकास के कारण वर्गीय विभेद से दो–चार हो रहे हैं। सामन्तवाद जहाँ पर कृषि क्षेत्र पर सीमित व्यक्तियों का अधिकार एवं श्रमिकों के श्रम पर भी इन सामन्तवादियों द्वारा अधिकार कर गम्भीर आर्थिक विषमताएँ खड़ी कर दी थी। कृषक फसल पर अपने द्वारा लगाये गये श्रम के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं से बहुत कम संसाधनों को प्राप्त कर पाता था, इसका परिणाम कई देशों में क्रान्ति के रूप में हुआ। कई देश सशस्त्र विद्रोह का केन्द्र बनें। द्वितीय विश्वयुद्ध के कालखण्ड में एशियाई देशों में ब्रिटिश साम्राज्यवाद अपनी अन्तिम सांसे गिन रहा था। भारत स्वतन्त्रता की दहलीज तक पहुँच चुका था परन्तु भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक विषमताओं खासकर कृषि क्षेत्र में दूर करना था। भारत के पड़ौस में चीन, रूस आदि देश मार्क्सवादी विचारधारा का क्रियाशील राजनीतिक पतन देख रहे थे चाहे वह रूस में लेलिन के रूप में या चीन में माओत्से तुंग के रूप में सत्ता पर समाजवादी विचारधारा का स्थापित होना था। भारत भी इससे अछूता ना रहा, भारत में भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शोषणकारी चरित्र, भूमि के अन्यायपूर्ण वितरण तथा अन्य कृषि समस्याओं को केन्द्र में रखते हुए बंगाल की भूमि से उठा एक आन्दोलन जो नक्सलबाड़ी गांव की सीमाओं को तोड़ता हुआ भारतीय प्रभुता एवं अखण्डता के लिए गम्भीर आन्तरिक सुरक्षा की चुनौती बन गया। यह नक्सलवादी आन्दोलन आज लगभग अपने अवसान की ओर बढ़ चुका है।

शोध के उद्देश्य

नक्सलवाद एक ऐसी समस्या है, जिससे समाज का प्रत्येक अंग प्रभावित है। इसलिए इस समस्या का समाधान खोजना भी सभी का कर्तव्य है। इस विषय को गंभीरता से समझने के लिए हमने शोधपत्र हेतु इस विषय का चयन किया है। इस शोध में हमने नक्सलवाद के उदय के कारणों से लेकर इसके विस्तार तक सभी पहलुओं का अध्ययन विस्तृत रूप में किया है। हमने नक्सलवाद पर लगाम लगाने हेतु सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यवाहियों का भी अध्ययन करने का प्रयास किया है। यह शोध–पत्र नक्सलवाद के चरम पर पहुंचने तक व उसके पश्चात् अवसान की ओर बढ़ने का अध्ययन करता है जो कि इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

कोई भी विचार शून्य के गर्भ से उत्पन्न नहीं होता, विचार का उदय देश, काल, वातावरण और तत्कालीन परिस्थितियों पर निर्भर करता है। नक्सलवाद का उदय भी इससे अछूता न था। यह भी मार्क्सवादी विचारधारा के गर्भ से उत्पन्न एक ऐसा

आन्दोलन था जिसने भारतीय सत्ता को गम्भीर चुनौती प्रस्तुत की थी। यह आन्दोलन क्षेत्रीय समस्या से बढ़कर राष्ट्रीय समस्या में परिणीत हो गया। इसकी ऐतिहासिक विकास यात्रा भी बहुत रोचक है।

नक्सलवाद के उदय का इतिहास वृत्त

माओवाद के प्रणेता माओ ने सत्ता को बन्दूक की नली से निकलना बताया था। भारत के पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी ग्राम में भी इस विचारधारा पर चलते हुए एक सशस्त्र आन्दोलन की शुरूआत हुई। नक्सलबाड़ी एक सीमावर्ती गांव है जिसकी सीमाएं नेपाल, बांग्लादेश एवं तिब्बत के निकट हैं। वर्ष 1967 में साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित किसान सभा ने सशस्त्र विद्रोह की शुरूआत की। 02 मार्च 1967 की एक घटना जिसमें स्थानीय जमींदार द्वारा एक किसान को बेरहमी से पीटा गया, प्रत्युत्तर में किसानों द्वारा लाल झण्डे लगाकर के अधिकांश भूमि को घेर लिया गया। प्रशासन ने दण्डात्मक कार्यवाही करते हुये किसानों को हटाने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप विद्रोह ने सरकारी कार्यालयों में आग लगाकर प्रशासन से जुड़े लोगों पर हमले शुरू कर दिये। समाज का वो हाशियों पर खड़ा वर्ग जो छुआछूत, जातपात का शिकार था वह भी इस आन्दोलन में सहभागी बन गया। चारू मजूमदार, मुजीबुर्रहमान व कानू सान्याल आदि नेताओं ने इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। यह आन्दोलन एक गम्भीर, कानूनी समस्या का कारण बनने लगा। आन्दोलनकारी जमीन पर अधिकार, फसलों को जबरन काट लेना, लूटपाट एवं विरोधियों की हत्या में संलिप्त थे। आन्दोलन के इस अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में एक अलग धड़े सी0पी0आई0 (मार्क्सवादी, लेनिनवादी) का जन्म हुआ। जिसने आगे बढ़कर नक्सलवादी आन्दोलन को मूर्त रूप प्रदान किया। यह वह समय था जब एक राजनीतिक शक्ति के रूप में कम्युनिस्ट पार्टी के लिए पश्चिम बंगाल एक राजनीतिक प्रयोगशाला बनने जा रहा था। कांग्रेस एवं सी0पी0आई0 की गठबन्धन सरकार में नक्सलवादी आन्दोलन पश्चिम बंगाल में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से बढ़ रहा था। प्रभाव का ही परिणाम था कि उड़ीसा, बिहार, आन्ध्रप्रदेश आदि राज्य भी इससे अछूते नहीं रहें। आन्दोलन की ध्वनि इतनी प्रभावशाली थी कि सैकड़ों सरकारी कर्मचारी, मेडिकल–इंजीनियरिंग के छात्र किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो गये।

70 के दशक में अनेक बुद्धिजीवी इस आन्दोलन के साथ सहभागी हो चुके थे। व्यापक जनाधार राज्य एवं केन्द्र सरकार के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न कर रहा था। जिसका परिणाम हजारों की संख्या में आन्दोलनकारियों की गिरफ्तारी एवं दण्डात्मक कार्यवाही के रूप में हुआ। नोम चोम्स्की ने केन्द्र सरकार को एक पत्र के माध्यम से यह अनुरोध किया कि जेलों में बन्द आन्दोलनकारियों को रिहा किया जाये एवं उनके विरूद्ध हो रही कठोर कार्यवाही को रोका जाये। यह सिर्फ एक पत्र या अनुरोध नहीं था अपितु नक्सलवाद के बढ़ते वैचारिक आधार एवं वैश्विक समर्थन की प्रतिध्वनि था।

आपातकालीन कालखण्ड में नक्सलवादी आन्दोलन नैपथ्य में चला गया, परन्तु वर्ष 1977 में केन्द्र में सत्ता परिवर्तन के साथ ही यह नये रूप में अवतरित होता है। आन्ध्र प्रदेश का करीमनगर अब इस आन्दोलन की प्रभाव भूमि बनने वाला था, किसानों ने विद्रोह कर वर्तमान तेलंगाना के क्षेत्र में जंगलों में रहकर नक्सली कार्यवाही करने का निणर्य लिया। क्षेत्रीय प्रसार करने के उद्देश्य से नक्सलवादी आन्दोलन नये क्षेत्रों की तलाश में जुट गया। नक्सलवाद के प्रमुख नेता विनोद मिश्र ने संसदीय सत्ता के महत्त्व को स्वीकार किया और आन्दोलन को गतिशीलता प्रदान करने के लिये तथा आन्दोलन के साथ जनसहभागिता बढ़ाने के लिये व्यापक कार्य योजना स्थापित की। आन्दोलनकारियों की नई फौज तैयार होने लगी जिसमें वैंक्टेश्वर राव, सोमनाथ चटर्जी, प्रदीप बनर्जी, शान्तिपाल, सत्य नारायण आदि इस आन्दोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता थे।

भारत में बनता लाल क्षेत्रः नक्सलवाद का बढ़ता प्रभाव

बंगाल के एक छोटे से गॉव में हुआ किसान विद्रोह शनैः शनैः भारतीय गणराज्य के बहुत बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभाव रखने लगा। किसान आन्दोलन कब सत्ता विरोधी आन्दोलन बन गया पता ही नहीं चला। बंगाल से परे आन्ध्र प्रदेश खासकर वर्तमान तेलंगाना, बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश का पूर्वी इलाका, उत्तराखण्ड का सीमायी क्षेत्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल आदि तक इसका प्रभाव देखा जा रहा है। गृह मंत्रालय ने अपनी रिपोर्ट में यह स्वीकार किया कि नक्सलवाद का प्रसार व प्रभाव किसी एक राज्य की सीमा तक नहीं अपितु व्यापक है। रिपोर्ट के अनुसार देश के लगभग चार दर्जन से अधिक जिले नक्सलवाद से बुरी तरह प्रभावित है। 17 जिलों में इसका प्रभाव देखने को मिलता है जबकि 50 से अधिक जिले आंशिक रूप से प्रभावित हो चुके हैं। नक्सली राजधानी के रूप में छत्तीसगढ़ के बस्तर सम्भाग का उदय होता है। यहाँ का दण्डकारवाय का क्षेत्र नक्सली कानून से चलने वाला क्षेत्र बन गया। नक्सलवादियों ने इस क्षेत्र में भारतीय प्रशासन से इतर स्वयं की समान्तर सरकार स्थापित की जिसे जनमत सरकार कहा गया। आम जनजीवन से लेकर के आर्थिक गतिविधियों तक नक्सलियों का व्यापक नियन्त्रण स्थापित हो चुका था। अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने के लिये नक्सलियों ने ''पीपुल्स वार ग्रुप'' के रूप में एक प्रमुख संगठन का निर्माण किया। 80 के दशक में कोड्डापल्ली सीतारमैया ने इस ग्रुप की स्थापना की। 90 के दशक में ''पीपुल्स वार ग्रुप'' का प्रभाव क्षेत्र लाल क्षेत्र के जंगलों में व्यापक हो गया। हजारों की संख्या में पेशेवर हिंसक नक्सली इस समूह से जुड़ गये। जिनका उद्देश्य आन्दोलन को संसाधन मुहय्या कराने के लिये जमींदारों, भूस्वामियों, नेताओं की हत्या व अपहरण, लूटपाट, जबरन धन उगाही आदि करना था।

इस आन्दोलन का दूसरा प्रमुख गुट एम0सी0सी0 (माओस्टी कम्युनिस्ट) सेन्टर है। इसका निर्माण कंटाई चटर्जी द्वारा वर्ष 1969 में किया गया। बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश इसके प्रमुख प्रभावी क्षेत्र थे। व्यापक नरसंहारों एवं क्रूरतापूर्ण हत्यायें करना इस गुट की मुख्य कार्यप्रणाली थी। वर्ष 2004 तक आते–आते नक्सली आन्दोलन को और अधिक व्यापक करने के उद्देश्य से ''पीपुल्स वार ग्रुप'' एवं एम0सी0सी0 विलय पर सहमत होते हैं और एक नये ग्रुप ''पीपुल्स लिबरेशन गोरिल्ला आर्मी'' का उदय होता है। इसके साथ ही देश में लगभग 20 ओर छोटे–बड़े नक्सलवादी संगठन अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थे।

जमीनी स्तर पर नक्सलियों की कार्यविधि–संरचना

कोई भी आन्दोलन अपनी व्यवस्थित संचालना के लिए स्पष्ट विचारधारा के साथ व्यवस्थित कार्यविधि की भी अपेक्षा करता है। नक्सलवाद भी व्यापक जन आधार निर्माण के लिये एवं संगठन के जमीनी प्रसार हेतु एक स्पष्ट व व्यवस्थित कार्यविधि को स्वीकार करता है। प्रारम्भ में यह एक छोटा किसान आन्दोलन लग रहा था जबकि इसकी वैचारिक संलग्नता चीन के निर्माता माओत्से तुंग से जुड़ी हुई थी। गौरिल्ला युद्ध चीन के निर्माण में एक प्रभावकारी कारक था। नक्सलवाद भी अपने विद्रोहियों को गौरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षित कर प्रशासनिक मशीनरी, पुलिस आदि पर हमले कर अपने आधार को विकसित करने में लग गया। घने जंगलों को प्रशिक्षण शिविरों एवं भर्ती शिविरों में बदला गया, जहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर विद्रोही जमींदारों, बड़े भूस्वामियों, साहूकारों

आरि धनाड्य वर्ग पर आक्रमण कर अपनी विचारधारा को प्रसारित कर रहे थे। आम जनमानस जो अभी तक इस धनाड्य वर्ग के शोषण का शिकार थे वह इस आन्दोलन के प्रति स्वाभाविक आकर्षण पाते है, जो इस आन्दोलन के जनाधार बढ़ने का कारण बना।

80 का दशक जो इस आन्दोलन के सम्बन्ध में प्रसार के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण कालखण्ड था। इस समय यह आन्दोलन लगभग अपने चरम की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा था। इस आन्दोलन ने ''तैलीय दाग नीति'' को अपनाया जिस प्रकार पानी की सतह पर तेल की छोटी–छोटी बूंदों को डाला जाये तो वे एक समयोपरान्त एकत्रित होकर अपने आकार को बड़ा कर लेती हैं, उसी प्रकार आन्दोलनकारियों ने राजनीति बनायी छोटे–छोटे स्तरों पर विभिन्न राज्यों ने अपने प्रसार को बढ़ाया जो एक समय के बाद वृहद आकार ले सकें।

गोरिल्ला युद्ध की रणनीति के अतिरिक्त नक्सलवाद कई बिन्दुओं पर काम करते हुए आगे बढ़ रहा था, जिसमें प्रचार का एक महत्वपूर्ण स्थान था। आन्दोलनकारी अपने विस्तार को पाने के लिए प्रचार को प्रमुखता से स्वीकार करते हैं। जिसमें की गयी घटनाओं, हत्याओं, लूटपाट, नरसंहार आदि का पम्पलेट, पोस्टर, भाषणों, रैलियों, लेखन, नुक्कड़ नाटकों का उपयोग कर जनमानस में प्रचारित किया जाता है। जिससे शोषित वर्ग उत्साह के साथ इन विद्रोहियों को समर्थन प्रदान कर सकें। प्रचार के साथ–साथ नक्सलवादियों ने जनमानस के माध्यम से अफवाह फैलाने का भी काम किया, जिसमें वर्गीय शोषण को इंगित करना, पुलिस उत्पीड़न की अफवाह फैलाना, सरकार द्वारा किये जाने वाले कार्यो को जनविरोधी बताना, जिससे पुलिस एवं प्रशासन के विरूद्ध स्थानीय लोगों में स्वाभाविक घृणा का भाव उत्पन्न हो। सैन्य कार्यवाही को रोकना आन्दोलनकारियों की मुख्य कार्यविधि थी। पुलिस आदि सैन्यबलों को उलझा कर अपनी पूर्व निर्धारित घटना को आसानी से अन्जाम देना था। इस आन्दोलन से जुड़े वैचारिक पुरोधा अनेक मंचों पर सरकार को उलझाने की नीति पर काम करते थे। मानवाधिकार के नाम पर आदिवासी असमिता के नाम पर, भूमि सुधार, पर्यावरण आदि का विरोध और विवाद उत्पन्न कर आन्दोलन के लिये माहौल तैयार करते थे। जिससे नक्सली भोले–भाले, ग्रामीण, कृषक आदिवासी को अपनी विचारधारा, भावुक अपीलों एवं शक्ति प्रदर्शन के बल पर मस्तिष्क परिवर्तित कर आन्दोलन के प्रति सहानुभूति पैदा करने में आसानी से सफल हो जाते थे, दूसरी ओर रैलानाच ग्रामीणों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का नक्सलियों का एक सांस्कृतिक हथियार था। इन सभी उपक्रमों से नक्सलवादी विचारधारा राज्य की सीमाओं से फैलते हुए एक राष्ट्रीय समस्या की शक्ल लेता जा रहा था।

नक्सलवादी आन्दोलन की यदि हम सांगठित संरचना को देखे तो इसमें केन्द्रीय समिति से लेकर दलम तक का स्पष्ट स्वरूप दिखाई देता है। छः प्रमुख सदस्यों की केन्द्रीय समिति इस आन्दोलन के मस्तिस्क के समान है, जो इस पूरे आन्दोलन को संचालित एवं नियन्त्रित करती है। सांगठिक प्रधान के रूप में सचिव की इस समिति में महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं, आंचलिक समितियाँ, कृषक संघों, आदिवासी महिला संघों, छात्र संगठनों आदि के सहयोग से मिलकर निर्मित होती हैं, जिनका मूल उद्देश्य सांगठिक प्रचार करते हुए आन्दोलन को विस्तार प्रदान करना है। मंडल समितियाँ कार्यकर्ताओं को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर के दलों को स्थान विशेष में अपने संगठन की जड़े मजबूत करने का आधार प्रदान करता है। दलम संगठन का सैन्य समूह है जो गोरिल्ला युद्ध में पारंगत होता है।

आन्दोलन माओं की उस विचारधारा से प्रभावित था जो रक्तसंघर्ष की प्रधानता देता था, ऐसी स्थिति में जनमानस को आन्दोलन से दूर एवं आन्दोलन की परिधि से बाहर लोगों में क्रोध भी उत्पन्न कर सकता था। इस स्थिति से बचने के लिये विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं आदि में एक मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित बुद्धिजीवी वर्ग ने वैचारिक संरक्षण प्रदान करना प्रारम्भ किया। इसी कारण आन्दोलन को ''द ऐनिमी विदिन'' तथा ''द फिफ्थ कोलमिस्ट'' की संज्ञा प्रदान की जाने लगी।

नक्सलवाद का अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से सम्बन्ध

वैश्विक स्तर पर शोषणकारी समाज व्यवस्था में मार्क्सवाद बड़ी ही लुभावनी विचारधारा था। क्षेत्रीय स्तर पर परिशोधन एवं परिष्कार के साथ मार्क्सवाद अपने मौलिक रूवरूप से कुछ भिन्न होकर अलग–अलग रूपों में दिखाई देने लगा। चीन, रूस आदि देशों के मार्क्सवादी विचारधाराओं से प्रभावित क्रान्तिकारियों ने अपनी देशज परिस्थितियों एवं संगठनात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मार्क्सवाद में अनेक परिवर्तन किये। नक्सलवाद मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ निकटता के साथ सहयोग स्थापित कर भारत में ही नहीं अपितु दक्षिण–एशियाई क्षेत्र में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्शाना चाहता था। इस आन्दोलन की योजना भारत की सीमाओं से आगे बढ़ते हुए नेपाल, बांग्लादेश एवं श्रीलंका को मिलाकर एक प्रभावकारी क्षेत्र ''लाल गलियारे'' के रूप में बनाना था। पेरू के संगठन ''लिबरेशन आर्मी'' एवं ''कुर्दिस्तान वर्क्स पार्टी'' के साथ ''पीपुल्स वार ग्रुप'' वैचारिक साम्य प्रस्तुत करता था। वर्ष 1995 में जब नक्सलवादियों का अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ निकट सहयोग देता है। जब बेल्जियम में वहां की ''वर्क्स पार्टी'' ने चालीस देशों के 60 संगठनों को आमंत्रित कर विद्रोही विचारधारा के सम्बन्ध में एक सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार में ''पिपुल्स वार ग्रुप'' बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करता दिखा।

प्रसार की छटपटाहट ''पिपुल्स वार ग्रुप'' को कई देशों के प्रतिबन्धित विद्रोही संगठनों के साथ हथियार एवं प्रशिक्षण के लिये सम्पर्क स्थापित करते देखा गया। श्रीलंकाई प्रतिबन्धित संगठन लिट्टे हथियार एवं प्रशिक्षण के लिए ''पीपुल्स वार ग्रुप'' के लिये निकट सहयोगी के रूप में आया। यह वह समय था जब दक्षिण–एशियाई देशों भारत, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश आदि के माओवादी विचारधारा से प्रेरित संगठन एक दूसरे के निकट आ रहे थें वर्ष 2001 में इन देशों के 9 माओवादी संगठनों ने मिलकर एक एकीकृत संगठन का निर्माण किया जिसका नाम ''को–ओडीनेशन कमेटी ऑफ माओइस्ट पार्टीज एण्ड आर्गेनाइजेशन'' रखा गया। नक्सलवाद का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के उद्देश्य से नेपाल से लेकर बिहार, दण्डकारण्य से लेकर तत्कालीन एकीकृत आन्ध्रप्रदेश तक संघन क्रान्तिकारी क्षेत्र अथवा ''रेड कॉरिडोर'' बनाने की दिशा में तेजी से काम किया गया। यह वह समय था जब छोटे–छोटे नक्सली संगठन मिलकर अधिक शक्तिशाली होकर और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये गम्भीर खतरा उत्पन्न करने लगे थे।

नक्सलवाद के उन्मूलन हेतु किये गये प्रयास

नक्सलवाद वैश्विक सहयोग प्राप्त करने के साथ ही अधिक खतरनाक एवं व्यापक क्षेत्र में प्रभाव रखने वाला आन्दोलन बन गया था। इस आन्दोलन को रोक पाना अब किसी प्रदेश की सीमित प्रशिक्षण प्राप्त पुलिस के बस की बात नहीं थी। इसलिये सरकार ने रणनीति के रूप में एक समेकित बहुआयामी प्रभावी प्रक्रिया को अपनाया जिसका मूल उद्देश्य क्षेत्रीय पुलिस बलों में व्यापक सामंजस्य खुफियातंत्र को विकसित कर नक्सलवादी आधारभूत ढाँचे को तोड़ना एवं विकसित हो रहे साझातन्त्र को प्रभावी रूप से नियन्त्रित करना था। विकास योजनाओं को सीधे नक्सल प्रभावित क्षेत्र में पहुंचाना, रोजगार के नये अवसरों का

सृजन करना एवं भूमि सम्बन्धी विवादों को, जन–शिकायतों को तत्काल एवं निष्पक्ष रूप से निस्तारित करने को प्राथमिकता दी गई। जिससे नवयुवक नक्सली आन्दोलन से एक निर्धारित दूरी बना सके। सरकार में अनेक नक्सली गुटों के साथ वार्ता करने की भी कोशिश की, जिससे क्षेत्रीय शान्ति स्थापित की जा सके। प्रभावी कार्ययोजना बनाते हुए गृहमंत्रालय ने पिछड़ा जिला पहल के तहत 65 नक्सल प्रभावित जिलों को आधारभूत संरचना के विकास हेतु प्राथमिकता प्रदान की। सीमावर्ती विकास कार्यक्रम एवं ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं को तृणमूल स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

वर्ष 2008 में योजना आयोग की तरफ से निर्मित समिति जिसकी अध्यक्षता डी0 बदोपाध्याय ने की थी, ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा, कि नक्सलवाद का समूल नाश बिना आदिवासी क्षेत्र में विश्वास बहाली के सम्भव नहीं है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक रूप से शोषित यह वर्ग अपनी समस्याओं के समाधान के लिये नक्सलवादी प्रभाव के कारण इस आन्दोलन की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। रिपोर्ट ने इंगित किया कि गरीबी एवं गरीबी से उत्पन्न शोषण नक्सलवाद के लिये संजीवनी के समान है, परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस रिपोर्ट पर कोई भी प्रभावकारी पहल सरकार द्वारा देखने को नहीं मिली। सरकार ने विभिन्न विकास योजनाओं के माध्यम से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में यह सन्देश देने का प्रयास किया कि सरकार आदिवासी, दलित, शोषित समाज के साथ है एवं उनके विकास के लिये प्रतिबद्ध है।

रोशनी योजना ग्रामीण विकास मन्त्रालय की 24 नक्सल प्रभावित जिलों की आदिवासी आबादी की 'कौशल विकास' की एक योजना है। जिसके माध्यम से नवयुवकों को स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित कर आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने की दिशा में प्रयास किया गया। उत्तर प्रदेश से लेकर छत्तीसगढ़ तक के संघन नक्सल प्रभावी जिलों में इस योजना के परिचालन से बड़े ही सकारात्मक परिणाम देखने को मिले, इस योजना का ही परिणाम था कि इन जिलों में नक्सलवादियों का प्रभाव धीरे–धीरे कम होने लगा।

देश के 83 नक्सल प्रभावी जिलों में विकास योजनाओं एवं आर्थिक उन्नयन हेतु योजना आयोग ने सम्मिलित कार्य योजना का निर्माण किया, जिसके तहत इन जिलों में मूलभूत, आधारभूत संरचना को विकसित कर सार्वजनिक सेवाओं का दायरा बढ़ाते हुए इस क्षेत्र के लोगों के बीच में विश्वास बहाली करना था। इन योजनाओं के साथ ही साथ जहाँ आम जनता के साथ सरकार सौम्यता के साथ निकट आने का प्रयास कर रही थी, वहीं नक्सलवादियों के द्वारा प्रति सन्तुलित प्रभावों को न्यूनतम करने के लिये शक्ति का प्रयोग करने से भी पीछे नहीं थी।

बन्दूक की नली से सत्ता के निकलने के सिद्धान्त को स्वीकारने वाली माओवादी विचारधारा से प्रेरित नक्सलवाद को जड़ से उखाड़ फैंकने के लिये सरकार ने व्यापक कार्ययोजना बनाते हुए समन्वित सैन्य कार्यवाही को भी ज़मीनी पर उतारा। यह वह समय था जब आये दिन अपने प्रभाव क्षेत्र में नक्सलवादी कोई न कोई बड़ी घटना को अन्जाम देने लगे थे, जिसे नियन्त्रित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय सुरक्षा बलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्ष 2010 में ''ऑपरेशन ग्रीन हंट'' नक्सलवाद के उन्मूलन के लिये देश के चार राज्यों में उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं पं0 बंगाल में प्रारम्भ किया गया। सी0आर0पी0एफ0 एवं राज्य पुलिस ने एक एकीकृत कमान स्थापित करते हुए सटीक खुफिया सूचनाओं को प्राप्त करने एवं नक्सलवाद के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने के लिये लगातार क्रियाशील है। इस ऑपरेशन का ही प्रभाव है कि नक्सलवाद आज अपने कई साथियों को खो चुका है, जिन्हें या तो 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के द्वारा मारा गया या वे स्वयं आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में शामिल हो गये।

आन्ध्रप्रदेश नक्सलवाद से गम्भीरतापूर्वक प्रभावित राज्य था। सुरक्षा के लिये इस गम्भीर खतरे से निपटने के लिए व्यापक पुलिस कार्यवाही करते हुए अपने पुलिस बल को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करते हुऐ सैनिकों को अधिक कार्यकुशल एवं चपल बनाया। 800 पुलिस बल के जवानों को जिन्हें प्रशिक्षित किया गया उन्हें ''ग्रे हाउंड्स'' की संज्ञा दी गई जिन्होंने लगभग 7000 नक्सलियों को संघर्ष में मार गिराया। इसी प्रकार की विशेष बटालियन का गठन विशेष प्रशिक्षित जवानों के साथ सी0आर0पी0एफ0 ने ''कोबरा'' के रूप में की।

छत्तीसगढ़ की सरकार नक्सलवाद के क्षेत्रीय प्रसार को रोकने के लिये ''सलवा जुडूम'' नामक कार्यक्रम चलाया जिसका उद्देश्य हथियारों का प्रशिक्षण देकर नक्सल प्रभावित क्षेत्र के युवाओं को नक्सली हिंसा से लड़ने के लिये तैयार करना था। बाद की सरकारों ने इस ''सलवा जुडूम'' को अवैध करार करते हुए प्रतिबन्धित कर दिया।

मूल्यांकन

स्वतंत्र भारत के इतिहास में आन्तरिक सुरक्षा के लिए सबसे गम्भीर खतरे के रूप में नक्सलवाद उभरा। यह आन्दोलन विभेदपूर्ण भू–व्यवस्था एवं शोषणकारी समाज संरचना से उत्पन्न था। चीन में माओवाद जिस विचारधारा के आधार पर सत्तासीन हुआ उसी विचारधारा से प्रेरित होकर नक्सलवाद भी भारत में अपनी भूमिका खोज रहा था। आदिवासी क्षेत्र जो विकास की मुख्यधारा से कोसो पीछे रह गये थे, इस आन्दोलन के विकास के लिये उर्वरा भूमि साबित हुए। सरकार और आदिवासी, दलितों के मध्य उपजें विश्वास की कमी ने इस आन्दोलन को व्यापक जन समर्थन प्रदान कराया। सरकार लगातार इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्शाना चाहती थी, परन्तु नक्सलियों ने सरकार एवं आदिवासियों के मध्य उपजे अविश्वास के कारण अपनी स्थिति सशक्त कर ली। गौरतलब है नक्सलवाद हमारे अकुशल भूमि प्रबन्धन एवं समेकित विकास के इस क्षेत्र तक न पहुँचने के कारण उपजी समस्या है। इसका समाधान सिर्फ पुलिस की कार्यवाही या दमन के माध्यम से नहीं किया जा सकता। इस आन्दोलन से जुड़े हुए भोले–भाले लोग अपने देश के ही नागरिक हैं जिन्हें सरकार से प्राप्त सुविधाओं का उपयोग करने का उतना ही मौलिक अधिकार है, जितना किसी अन्य नागरिक का। इसलिये सरकार लगातार इस क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं को विकसित करने का प्रयास कर रही है। बेहतर चिकित्सीय सुविधाएँ, शिक्षा, पेयजल आवास आदि आधारभूत संरचनाओं के विकास ने आन्दोलन प्रभावित जनता के मध्य सरकार के प्रति विश्वास बहाली में भूमिका निभाई है। रोजगार सृजन के नये अवसरों ने युवा वर्ग को हथियार छोड़ मुख्यधारा में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया है। सरकार के ये प्रयास प्रभावकारी सिद्ध हो रहे हैं। सैन्य दबाव के कारण भी सी0आर0पी0एफ0 एवं क्षेत्रीय पुलिस की व्यापक कार्यवाहियों ने आन्दोलन को अवसान की ओर धकेल दिया है। आन्दोलन प्रभावित क्षेत्र की जनता नक्सलवादियों की सूचनाएँ उपलब्ध करा सी0आर0पी0एफ0 एवं पुलिस के बड़े ऑपरेशन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिस प्रकार लगातार नक्सलीय गठन के बड़े नेता मारे अथवा पकड़े जा रही हैं यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि बहुत जल्द ही यह आन्दोलन अतीत की बात हो सकता है। सरकार एवं अन्य सामाजिक संगठनों को अपनी भूमिका और प्रभावी ढंग से निभानी पड़ेगी जिससे इस क्षेत्र में फिर से नक्सलवादी आन्दोलन व्यापकता न प्राप्त कर सके।

संदर्भ

1. जे0सी0 जौहरी, नक्सलाइट पॉलिटिक्स इन इण्डिया, रिसर्च पब्लिकेशन, 1972
2. विश्वजीत सपन, आतंकवाद एक परिचय, आकृति प्रकाशन, 2011
3. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर, 2013
4. पी0सी0 जोशी, नक्सलिज्म एट ए ग्लैंस, कल्पज प्रकाशन, 2012
5. योजना, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, मार्च 2006
6. विवेक सक्सेना, सुनील राजेश, नक्सली आतंकवाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
7. https://www.efsas.org>study
8. द हिन्दू, संपादकीय, 12 मार्च, 2021
9. डॉ. अवतार सिंह नेगी, नक्सलवादः आन्तरिक शासन को चुनौती देती एक समस्या, तुणीर, गोरखपुर प्रकाशन, अगस्त 2006
10. https://www.drishtiias.com
11. डॉ. विरेन्द्र सिंह भागेल, नक्सलवाद समस्या और समाधान, स्वास्तिक प्रकाशन, दिल्ली, 1 जनवरी, 2011

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.